# मछली पालन


| S.NO | Index |
|---|---|
| 7. | मछली पालन में सफ़लता की कहानी |
| 8. | मछली पालन से जुड़ी सब्सिडी और योजनाएं |
| 9. | भारत में मछली पालन (Fish Farming in India) पर अक्सर पूछे जाने वाले सवाल |

# मछली पालन में सफ़लता की कहानी

भारत में उत्तराखंड के टिहरी ज़िले के पंचम सिंह भी करीब 5 सालों से सफलतापूर्वक रेनबो ट्राउट मछली का उत्पादन कर रहे हैं। रेनबो ट्राउट (Rainbow Trout Fish) एक विदेशी मछली है जिसका उत्पादन देश के पहाड़ी इलाकों में खूब किया जा रहा है और रेनबो ट्राउट मछली पालन यहां के लोगों के लिए स्वरोज़गार का अच्छा ज़रिया बन गया है।

पंचम सिंह ने अपने इस सफ़र की शुरुआत के बारें में बताया कि साल 2013 से पहले धान, गेहूं, मटर, धनिया, अदरक सब चीज़ों की खेती होती थी, लेकिन 2013-14 में आई प्राकृतिक आपदा के बाद ज़मीन पत्थरीली हो गई, जिससे फसलें उगाना संभव नहीं था, तो पंचम सिंह ने आपदा को अवसर में बदलते हुए मत्स्य विभाग से मदद ली और उन्हें ट्राउट मछली पालन के लिए 40 फीसदी सब्सिडी मिल गई। जिसके बाद 2018-19 में उन्होंने ट्राउट मछली पालन का काम शुरू किया। आज मछली पालन के साथ ही उनके पास हैचरी भी है जहां वो मछलियों के बच्चे का भी उत्पादन करते हैं।

वहीं मिजोरम के इस युवा की कहानी सुनिए 28 वर्षीय सी लालमिंगथांगा के पास 2.5 एकड़ ज़मीन है। हालांकि, खेती की बजाय उनका परिवार मुख्य रूप से मछली पालन पर ही निर्भर

है। पहले इससे उन्हें पर्याप्त आमदनी नहीं हो पाती थी। इसका कारण था मछली पालन के क्षेत्र में कौशल की कमी। तो, सी लालमिंगथांगा ने एक ट्रेनिंग प्रोग्राम में भाग लिया। कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी (ATMA) ने फरवरी 2021 में 'मछली पालन और प्रबंधन' पर Skill Training for rural Youth (STRY) के तहत ये ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजित किया था।

इससे उन्हें सजावटी मछली पालन की वैज्ञानिक तकनीकों के बारे में जानकारी मिली। वैज्ञानिक तकनीक से सजावटी मछली पालन (Ornamental Fish Farming) करने से सी लालमिंगथांगा को प्रति महीने 20 हज़ार रुपये की शुद्ध आय प्राप्त होती है। आज लालमिंगथांगा न सिर्फ़ अपना व्यवसाय आगे बढ़ा रहे हैं, बल्कि गांव के अन्य किसानों को भी वैज्ञानिक मछली पालन का महत्व समझाकर आगे बढ़ने में उनकी मदद कर रहे हैं। साथ ही वह इस क्षेत्र में आने के लिए युवाओं को प्रेरित भी कर रहे हैं।

## मछली पालन से जुड़ी सब्सिडी और योजनाएं

प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के अंतर्गत सरकार ने बैकयार्ड रिसर्कुलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम के माध्यम से मछली पालन की योजना शुरू की है। इस योजना के तहत सरकार महिलाओं, अनुसूचित जातियों और जनजातियों को 60 प्रतिशत सब्सिडी

प्रदान कर रही है। इसके अलावा, आम जनता के लिए भी योजना में प्रावधान है, जिसमें उन्हें 40 प्रतिशत सब्सिडी दी जा रही है। इस योजना के अंतर्गत, आप घर में सीमेंटेड टैंक बनाकर मछली पालन कर सकते हैं।

मछली पालन के लिए घर के अंदर दो प्रमुख तरीके अपनाए जा सकते हैं। पहला तरीका है सीमेंटेड टैंक का उपयोग, और दूसरा तरीका प्लास्टिक टैंक का उपयोग। यदि आप सीमेंटेड टैंक बनाते हैं, तो वह ऐसा होना चाहिए जिसमें कम से कम 70 से 80 किलो मछली रखी जा सके। यदि आप प्लास्टिक टैंक का उपयोग करते हैं, तो टैंक में एक बार में 10 हजार सिंघी मछली के बीज डालें। इन मछलियों को बड़े होने में कम से कम चार महीने का समय लगेगा। एक टैंक में मछली पालन कर आप आसानी से 2 लाख रुपये तक का मुनाफा कमा सकते हैं।

## भारत में मछली पालन (Fish Farming in India) पर अक्सर पूछे जाने वाले सवाल

### सवाल 1: क्या भारत में मछली पालन से अच्छी कमाई हो सकती है?

**जवाब**: जी हां, भारत में मछली पालन बहुत फ़ायदे का कारोबार है। यहां पांच तरह की मछलियां ऐसी हैं जिनसे अच्छी

कमाई हो सकती है। मछली पालन से बहुत ज़्यादा मुनाफ़ा मिल सकता है।

**सवाल 2: भारत में कौन सी मछली सबसे तेज़ बढ़ती है?**

**जवाब**: कतला मछली सबसे तेज़ बढ़ती है। यह भारत, नेपाल, पाकिस्तान, बर्मा और बांग्लादेश में पाई जाती है। यह मछली पानी की ऊपरी सतह पर रहती है और छोटे जीवों को खाती है।

**सवाल 3: सजावटी मछली पालन से कितना पैसा कमाया जा सकता है?**

**जवाब**: सजावटी मछली पालन छोटे या बड़े पैमाने पर किया जा सकता है। अगर आप छोटा सा काम शुरू करना चाहते हैं, तो आपको शेड बनाने, मछलियों का खाना और ज़रूरी सामान खरीदने में 50-60 हजार रुपये लगेंगे। इससे आप हर महीने 3-5 हजार रुपये कमा सकते हैं।

**सवाल 4:मछली पालन के लिए जगह कैसे चुनें?**

**जवाब**: मछली पालन शुरू करने के लिए ऐसी जगह चुनें जहां पानी आसानी से मिल सके। जैसे:

नदी के पास: मछली पालन के लिए नदी के पास स्थान चुनना पानी की निरंतर उपलब्धता और बेहतर जल गुणवत्ता सुनिश्चित

करता है। नदी का जल प्राकृतिक जीवाणु और कीट प्रदान करता है, जो मछलियों के आहार का एक हिस्सा बन सकते हैं।

तालाब के पास: तालाब के पास मछली पालन करने से प्राकृतिक जल स्रोतों की आसानी से पहुंच मिलती है, जिससे मछलियों को स्वच्छ जल मिलता है।

नहर के पास: नहर के पास स्थित स्थल पर मछली पालन से सिंचाई के लिए पर्याप्त जल की सुविधा मिलती है, जो मछली के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होती है।

-पोखर के पास: पोखर एक प्राकृतिक या कृत्रिम जलाशय होता है, जो पानी का भंडारण करने के लिए बनाता है। इसे आमतौर पर छोटे तालाब के रूप में समझा जा सकता है, जिसमें स्थिर पानी होता है और जो आमतौर पर खेतों, गाँवों, या अन्य क्षेत्रों में जल संसाधन के रूप में

उपयोग किया जाता है। प्राकृतिक पोखर का इस्तेमाल करने से इंफ्रास्ट्रक्चर की लागत कम हो सकती है, क्योंकि आपको नया तालाब खोदने की ज़ रूरत नहीं होती।